RJPP, Vol. XXIII, No.II, April 25-Sept.25, ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411, Impact Factor 8.858
https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.038

बिहार तराई क्षेत्रः ''स्त्री साक्षरता की चुनौतियाँ और संभावनाएँ''

अविनाश प्रकाश
शोधार्थी (भूगोल विभाग)
डी. डी. यू. गोरखपुर यूनिवर्सिटी, गोरखपुर
ईमेलः 2107avin@gmail.com

सारांश

मानव समाज के विकास में शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन माना गया है। यह न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम है, बल्कि सामाजिक मूल्यों, आर्थिक अवसरों और राजनीतिक सहभागिता का भी आधार बनाती है। विशेष रूप से स्त्री शिक्षा या स्त्री साक्षरता को किसी भी समाज की उन्नति का सूचक माना जाता है। कारण यह है कि महिला समाज की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है और उसकी स्थिति परिवार, समाज एवं राष्ट्र के विकास से सीधे जुड़ी होती है। यदि समाज की आधी आबादी शिक्षा से वंचित रह जाए, तो विकास की प्रक्रिया अधूरी रह जाती है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो स्त्रियों की साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में सदैव निम्न रही है। इसके पीछे पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, रूढ़िवादी परंपराएँ, आर्थिक निर्भरता, बाल विवाह, घरेलू दायित्व और शिक्षा संबंधी संसाधनों की कमी जैसे कारण प्रमुख रहे हैं। यह स्थिति न केवल महिलाओं के व्यक्तिगत विकास में बाधक रही है, बल्कि राष्ट्र की प्रगति को भी अवरुद्ध करती रही है। निरक्षर महिला अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं हो पाती तथा आधुनिक विकास प्रक्रियाओं में सक्रिय योगदान देने से वंचित रह जाती है।

साक्षर महिला न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को सुधारती है, बल्कि वह बच्चों के पालन–पोषण, उनके स्वास्थ्य,

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 28/08/25
Approved: 14/09/25

अविनाश प्रकाश

बिहार तराई क्षेत्रः ''स्त्री साक्षरता की चुनौतियाँ और संभावनाएँ''

RJPP Apr.25-Sept.25, Vol. XXIII, No. II, Article No.38 Pg. 291-296
Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.038

/शिक्षा और संस्कारों पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। स्त्री साक्षरता का सीधा संबंध जनसंख्या नियोजन, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी, स्वच्छता और पोषण सुधार जैसे पहलुओं से है। इसके अतिरिक्त साक्षर महिलाएँ आर्थिक गतिविधियों में भी भागीदारी कर आत्मनिर्भरता प्राप्त करती हैं, जिससे परिवार की आय और सामाजिक स्थिति दोनों सुदृढ़ होती हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी स्त्री साक्षरता को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया है। लैंगिक समानता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सामाजिक न्याय जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। यही कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और सरकारों द्वारा महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विविध योजनाएँ एवं नीतियाँ लागू की जा रही हैं।

मुख्य शब्द

सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, मानव संसाधन, सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास, राजनीतिक सहभागिता, पितृसत्तात्मक समाज, रूढ़िवादिता, सामाजिक परिवर्तन, परिवार नियोजन, स्वास्थ्य और पोषण, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, आत्मनिर्भरता, अवसर, अधिकार, सतत विकास लक्ष्य।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में स्त्री साक्षरता की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना, साक्षरता में लैंगिक अंतर का विश्लेषण करना, स्त्री साक्षरता में बाधक कारकों की पहचान करना, महिला सशक्तिकरण से संबंध स्थापित करना, साक्षरता और सामाजिक–आर्थिक विकास का संबंध स्पष्ट करना एवं भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है।

आकड़ा श्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है, जिसके लिए Distict Census Handbook Bihar, 2001 और 2011 का विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। विधितंत्र के रूप में सम्पूर्ण क्षेत्र के प्रति एक हजार पुरुषों के पीछे स्त्रीयों की संख्या को आधार मानते हुए क्षेत्र में स्थानीय विविधताओं और उनके कारकों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

भौगोलिक दृष्टि से तराई क्षेत्र पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, और किशनगंज के कुल 32 सी० बी० डी० क्षेत्रों में फैला हुआ है। अक्षांशीय रूप से यह भारत के उत्तर में 21°58'' उत्तरी अक्षांश से 27°31'' उत्तर के बीच फैला हुआ है। इसका देशांतरीय विस्तार 83°45'' पूर्वी देशान्तर से 88°17'' पूर्व के मध्य है। कुल क्षेत्रफल 22130 वर्ग किमी० है जिसमें ग्रामों की संख्या 6784 हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र बाकी कुल आबादी 2,36,76,411 है। जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 2,20,94,452 है और नगरीय जनसंख्या 15,81,959 है। यह बिहार के भौतिक क्षेत्रफल और जनसंख्या का क्रमशः लगभग 11% और 4% भाग घेरता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र निश्चित रूप से गंभीर समस्याओं वाला क्षेत्र है। यह बिहार के कुल 7 जनपद के 32 सी०डी०बी० (Community Development Block) सामुदायिक विकास खंड में फैला हुआ है। इसके उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में झारखंड तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित है। भूगोल, इतिहास, अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति

की दृष्टि से इस राज्य का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इन्हीं कारणों से शोधकर्ता ने अपने अध्ययन हेतु बिहार राज्य के तराई क्षेत्र को चयनित किया है।

बिहार का तराई क्षेत्र मुख्यतः पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया और किशनगंज जनपदों तक विस्तारित हैं। यह क्षेत्र अपनी भौगोलिक एवं सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं के कारण अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।

तालिका संख्या– 1

बिहार तराई क्षेत्रः स्त्री साक्षरता में गत्यात्मकता

क्र.सं.	सी०डी०बी० का नाम	2001	2011
1.	सिधवा	18.6	41.2
2.	गौनाहा	23.6	47.3
3.	नरकटियागंज	29.5	45.8
4.	ढाका	27.7	45.8
5.	सुप्पी	27.7	42.3
6.	मनितारण	24.9	42.7
7.	सिकटा	22.5	42.7
8.	रक्सौल	28.1	45.4
9.	अदापुर	16.4	38.9
10.	बनकटवा	14.9	38.0
11.	रामनगर	28.8	44.9
12.	घोरासहा	19.7	41.72
13.	बैरनगनिया	27.4	43.0
14.	मजोरगंज	22.7	39.4
15.	सोनबरसा	21.1	37.6
16.	परिहार	20.3	35.4
17.	सुरसंड	26.9	43.2
18.	निर्मली	27.2	43.0
19.	बसन्तपुर	29.4	48.8
20.	नरपतगंज	20.6	42.4
21.	फोरबेशगंज	26.9	47.2
22.	कुरसकत्ता	21.3	45.6
23.	सिकटी	19.7	46.4
24.	हरलाखी	20.5	42.3
25.	बासोपट्टी	25.0	46.1
26.	जयनगर	28.2	45.9
27.	लदनिया	18.8	43.2
28.	लौकहा	20.1	42.7
29.	लौकही	17.1	39.1
30.	टेरहगाछ	12.0	42.0
31.	दिगहलबैंक	13.8	40.2
32.	ठकुरगंज	18.6	42.8
औसत		**22.4**	**39.7**

श्रोतः Distict Census Handbook Bihar, 2001, 2011।

स्त्री साक्षरता का स्थानिक वितरणः– अध्ययन क्षेत्र में स्त्री साक्षरता के आँकड़ों को प्रखंडवार दर्शाया गया है। प्रति इकाई क्षेत्रफल में एक हजार पुरुषों के सापेक्ष में महिलाओं की संख्या का अध्ययन किया है।

तालिका संख्या– 2

बिहार तराई क्षेत्रः स्त्री साक्षरता में गत्यात्मकता

	2001		2011	
औसत	22.4		39.7	
	सी०डी०बी०	%	सी०डी०बी०	%
औसत से अधिक	16	50.00	18	56.25
औसत से कम	16	50.00	14	43.75
योग	32	100	32	100

तालिका संख्या– 3

बिहार तराई क्षेत्रः स्त्री साक्षरता, क्षेत्रीय गत्यात्मकता

	2001	2011
औसत से अधिक	रामनगर, गौनाहा, मनितारण, नरकटियागंज, ढाका, सुप्पी सिकटा, रक्सौल, बैरनगनिया, मजोरगंज, सुरसंड, बासोपट्टी, जयनगर, निर्मली, बसन्तपुर, फोरबेशगंज	गौनाहा, नरकटियागंज, ढाका, बासोपट्टी, जयनगर, बसन्तपुर, नरपतगंज, फोरबेशगंज, कुरसकत्ता, सिकटी, टेरहगाछ दिगहलबैंक ठकुरगंज
औसत से कम	ल्दनिया लौकहा लौकही नरपतगंज, कुरसकत्ता सिकटी, टेरहगाछ, दिगहलबैंक, ठकुरगंज	सिधवा, रामनगर मनितारण सिकटा रक्सौल आदपुर बैरनगनिया, बनकटवा घोरासहा सुप्पी मजोरगंज सोनबरसा परिहार सुरसंड हरलाखी, लदनिया लौकही लौकहा निर्मली

लगातार औसत से अधिक रहने वाले प्रखण्डः– गौनाहा, नरकटियागंज, ढाका, बासोपट्टी, जयनगर, बसन्तपुर, फोरबेशगंज इन क्षेत्रों ने 2001 से 2011 तक अपने प्रदर्शन को बनाए रखा। इसका संकेत है कि यहाँ सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर या भौगोलिक सुविधाएँ अपेक्षाकृत बेहतर रही हैं।

2001 में औसत से अधिक, लेकिन 2011 में औसत से कमः– रामनगर, मनितारण, सिकटा, रक्सौल, बैरनगनिया, मजोरगंज, सुरसंड, निर्मली, सुप्पी इन प्रखण्डों में गिरावट का रुझान दिखता है। संभवतः शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार या आधारभूत सुविधाओं की कमी के कारण विकास दर/साक्षरता दर अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सकी।

2001 में औसत से कम, लेकिन 2011 में औसत से अधिकः– नरपतगंज, कुरसकत्ता, सिकटी, टेरहगाछ, दिगहलबैंक, ठकुरगंज इन क्षेत्रों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। यह संकेत करता है कि यहाँ सरकारी योजनाओं, शिक्षा के प्रसार या सामाजिक जागरूकता के कारण स्थिति में सुधार हुआ।

लगातार औसत से कम रहने वाले प्रखण्डः– लदनिया, लौकही, लौकहा इन क्षेत्रों की स्थिति चिंताजनक रही। दो दशकों में भी कोई बड़ा सुधार नहीं हो सका। इसके पीछे अविकसित बुनियादी ढाँचा, शिक्षा का निम्न स्तर, या भौगोलिक बाधाएँ कारण हो सकती है।

चुनौतियाँ

1. **क्षेत्रीय असमानता–** कुछ प्रखण्ड निरंतर औसत से अधिक प्रगति कर रहे हैं, जबकि अन्य लगातार औसत से कम रह गए हैं। यह असमानता सामाजिक–आर्थिक असंतुलन को बढ़ाती है।
2. **शैक्षिक पिछड़ापन–** लदनिया, लौकही, लौकहा जैसे प्रखण्डों में शिक्षा का स्तर अभी भी निम्न है, जिससे मानव संसाधन विकास बाधित हो रहा है।
3. **बुनियादी सुविधाओं की कमी–** स्वास्थ्य, परिवहन, उद्योग एवं रोजगार के अवसरों की कमी के कारण कई प्रखण्ड अपेक्षित विकास दर हासिल नहीं कर पा रहे हैं।
4. **भौगोलिक एवं सीमावर्ती समस्याएँ–** नेपाल सीमा से सटे इलाकों में तस्करी, असुरक्षा, पलायन और अस्थिर रोजगार जैसी समस्याएँ विकास में बाधक हैं।
5. **सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ–** रूढ़िवादी सोच, महिला शिक्षा में पिछड़ापन, और जागरूकता का अभाव अभी भी कई क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

संभावनाएँ

1. **शैक्षिक सुधार से प्रगति–** जिन प्रखण्डों ने औसत से कम से अधिक की ओर छलांग लगाई (जैसे नरपतगंज, कुरसकत्ता, सिकटी आदि), वे दर्शाते हैं कि शिक्षा व योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन से अन्य पिछड़े क्षेत्र भी प्रगति कर सकते हैं।
2. **सरकारी योजनाओं का लाभ–** परिवार नियोजन, साक्षरता मिशन, स्वास्थ्य अभियान और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को सही ढंग से लागू करके पिछड़े प्रखण्डों को भी औसत से अधिक की श्रेणी में लाया जा सकता है।
3. **सीमा क्षेत्र की संभावनाएँ–** भारत–नेपाल सीमा क्षेत्र व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का केन्द्र बन सकता है, जिससे आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होगी।
4. **महिला शिक्षा व सहभागिता–** महिला साक्षरता में वृद्धि से परिवार नियोजन, स्वास्थ्य सुधार और आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय बदलाव लाया जा सकता है।
5. **नवाचार और रोजगार अवसर–** कृषि आधारित उद्योग, लघु उद्योग और स्वरोजगार योजनाएँ क्षेत्रीय विकास की गति को तेज़ कर सकती हैं।

निष्कर्ष

2001 और 2011 की तुलना से स्पष्ट होता है कि बिहार तराई क्षेत्र में विकास और प्रगति की स्थिति समान रूप से नहीं रही है। कुछ प्रखण्ड जैसे गौनाहा, नरकटियागंज, ढाका, बासोपट्टी, जयनगर, बसन्तपुर और फोरबेशगंज लगातार औसत से अधिक श्रेणी में बने रहे, जिससे यह संकेत मिलता है कि इन क्षेत्रों में शिक्षा, आधारभूत संरचना और सामाजिक जागरूकता अपेक्षाकृत बेहतर रही। दूसरी ओर, लदनिया, लौकही और लौकहा जैसे प्रखण्ड लगातार औसत से कम श्रेणी में बने रहे, जो इनकी शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन की ओर इशारा करते हैं।

इसके अतिरिक्त, कुछ प्रखण्डों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। जैसे– नरपतगंज, कुरसकत्ता, सिकटी, टेरहगाछ, दिगहलबैंक और ठकुरगंज, जो 2001 में औसत से कम थे, लेकिन 2011 में औसत से अधिक श्रेणी में पहुँच गए। यह सुधार दर्शाता है कि यदि योजनाओं का सही कार्यान्वयन हो और शिक्षा–स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार किया जाए तो पिछड़े क्षेत्र भी प्रगति कर सकते हैं। साथ ही, कुछ प्रखण्ड जैसे रामनगर, मनितारणा, सिकटा, रक्सौल, बैरनगनिया, मजोरगंज, सुरसंड, निर्मली और सुप्पी 2001 में औसत से अधिक स्थिति में थे, लेकिन 2011 तक औसत से कम में चले गए। यह गिरावट बताती है कि विकास की स्थिरता बनाए रखना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना नए सुधार लाना।

कुल मिलाकर यह निष्कर्ष निकलता है कि बिहार तराई क्षेत्र में विकास की स्थिति मिश्रित रही है। जहाँ कुछ प्रखण्ड लगातार आगे बढ़ रहे हैं, वहीं कुछ क्षेत्र स्थिर या पिछड़े हुए हैं। इसलिए क्षेत्रीय असमानता को दूर करना, शिक्षा का प्रसार करना, महिला साक्षरता को बढ़ावा देना, और सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना आने वाले समय में संतुलित विकास की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

संदर्भ

1. Distict Census Handbook Bihar, 2001, 2011
2. कुमारी सरिताः Population Geography of Bihar
3. सिंह अजय (2019) ने ''जनपद लखनऊ में जनसंख्या गत्यात्मकता एवं परिवार कल्याण''।